ISSN 2456–4753
प्लूटो
अंक 5 वर्ष 2
दिसम्बर - जनवरी, 2018
मूल्य ₹60

तोते

प्रभात

बाघ दहाड़ा तो जंगल में
तोते उड़ गए
आँख घुमा तोतों ने पूछा
किसके उड़ गए

चित्रः तापोशी घोषाल

माशा अल्ला

कमला भसीन

कभी न खाऊँ मैं रसगुल्ला
कभी न चाहूँ दही का भल्ला
देख के घर में करम कल्ला
मारे खुशी के करूँ मैं हल्ला
गाजर मुझे है बेहद भाती
पर हलुवे के पास न जाती
जामुन काले खूब उड़ाती
गुलाब जामुन पर एक न खाती
मैं कहती हूँ खुल्लम खुल्ला
मेरी पसन्द है माशा अल्ला

चित्रः सुजाशा दासगुप्ता

बस्ता

शशि सबलोक

मैं अपनी बहुत सारी बातें अपने बस्ते में रखती हूँ। नहीं, स्कूल वाले बस्ते में नहीं। पुराने वाले बस्ते में। स्कूल वाले बस्ते में तो बहुत सारी चीज़ें होती हैं। किताबें होती हैं, टिफिन, पेंसिल बॉक्स होता है। बस्ते में कोई बात किसी किताब में आकर दब सकती है। और टिफिन बॉक्स में आ गई तो बेकार में तेल लग जाएगा। बात लम्बी हो तो आधी टिफिन बॉक्स में आधी बाहर लटकती रहेगी। और पेंसिल बॉक्स में रबर से थोड़ी-सी मिट गई तो? इसलिए मैं सारी बातें खाली बस्ते में ही रखती हूँ।

चित्रः इन्द्रप्रोमित राय

पर बस्ते में रखने में भी अब एक दिक्कत आ रही है। मैं कल एक बात ढूँढ रही थी तो मैंने देखा बस्ते में सारी बातें आपस में उलझ गई थीं। बातों को सुलझाना बहुत मुश्किल हो गया था। तो बताओ अब क्या करूँ... प्लूटो

आलू

अरुण कमल

कहते हैं शुरू में आलू बिलकुल गोल था। गेंद जैसा। रखा जाता यहाँ तो लुढ़ककर चला जाता वहाँ। सब परेशान हो जाते। लोग आलू ढूँढते रह जाते। तब धरती को एक तरकीब सूझी। उसने आलू को थोड़ा ऊबड़-खाबड़ बना दिया। कई जगह ज़रा दबाया। कहीं उठाया। कई छोटे-छोटे गढ्ढे बना दिए।

आलू है भी कितना मज़ेदार! मिट्टी के ऊपर हरी पत्तियाँ होती हैं। और अन्दर जड़ों में आलू के झब्बे। बड़े आलू। छोटे आलू। नन्हे आलू। इतने मुलायम। भीगे। नींद में डूबे। गीली मिट्टी से लथपथ। छिलके इतने पतले कि ज़रा-सा बोरसी या अँगीठी में रख

चित्रः अजंता गुहाठाकुरता

दो तो फड़-फड़ कर पकने लगते हैं। तब ठण्डा होने पर छिलका झुर्रियों से भर जाता है। गर्म-गर्म मुँह में डालो तो आँखों में पानी आ जाए। ज़रा-सा नमक छिड़क दो काट कर। थोड़ा निम्बू। क्या कहने फिर!

मुझे तो आलूदम बहुत पसन्द है। उबले आलुओं का रस्सेदार दम। और ये दम भी कित्ते तरह के हैं। कश्मीरी दम मुझे सबसे ज़्यादा पसन्द हैं।

पापा का किचन

सुशील शुक्ल

यहाँ जो भी चाहे आए
हरदम मिलती गरम चाय
कभी बड़ी कभी दाल
अण्डे लेते हैं उबाल
जब भी मेरा होता मन
इसमें पकता चिकन
मेरे पापा का किचन

चित्र - प्रोइती राय
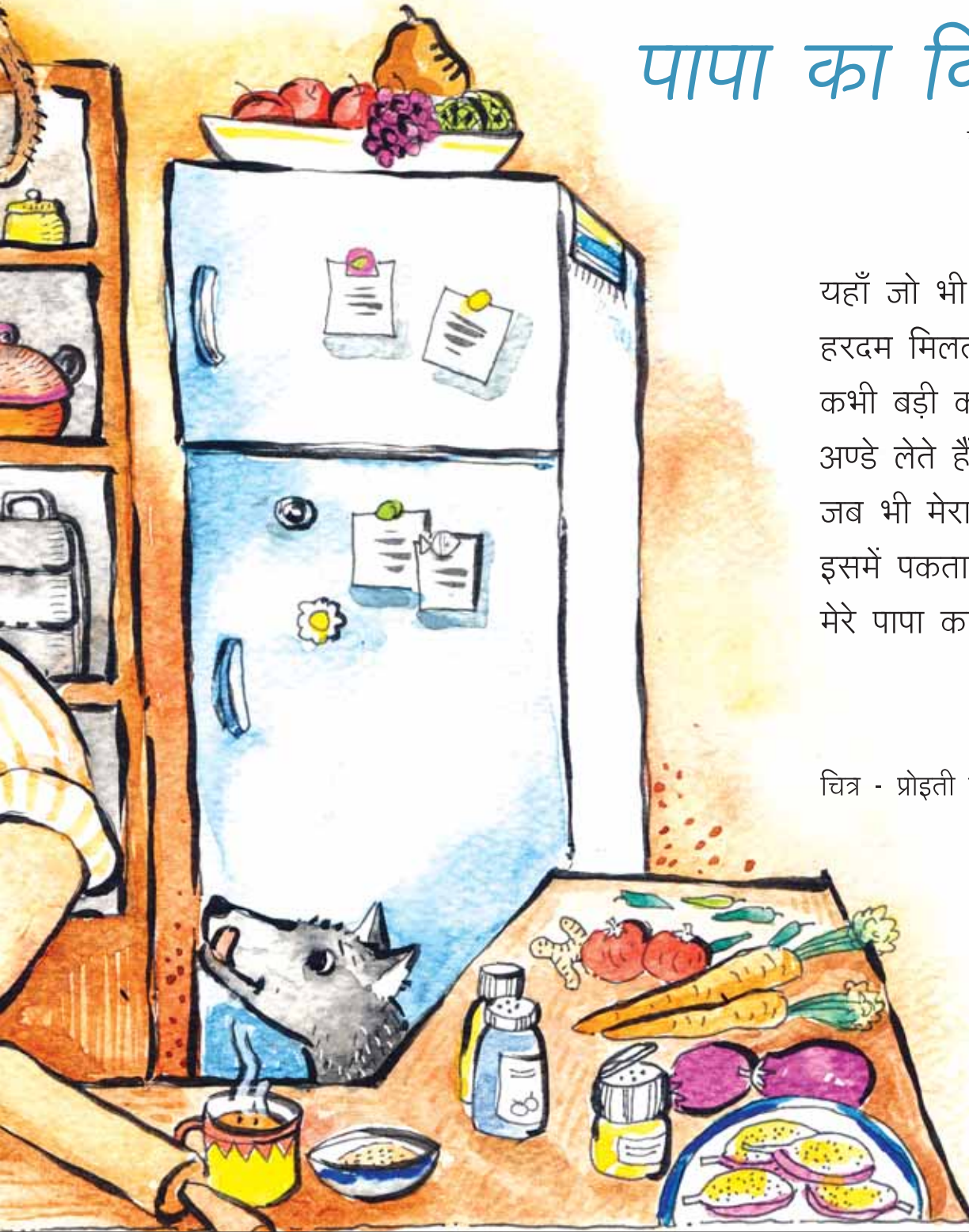
बाघ का बच्चा

प्रयाग शुक्ल

रस्ता पक्का हो या कच्चा
चलता उस पर बाघ का बच्चा।
कभी उछलता कभी कूदता
धूम मचाता बाघ का बच्चा।
बाल पूँछ के और मूँछ के
लहराता है बाघ का बच्चा।
पंजे अपने कहीं अड़ाता,
सुस्ताता है बाघ का बच्चा।
माँ जब चलती वह चल पड़ता
कभी नहीं वो गिरता पड़ता
पानी में भी उछल तैरकर
चलता जाता बाघ का बच्चा

चित्रः देबब्रत घोष

बड़े लोग बुद्धू होते हैं?

मुकेश मालवीय

इफ्फत और राशिद के गाँव में नया-नया मोबाइल टॉवर लगा है। राशिद ने इफ्फत से कहा, "इतनी ऊँची कोई चीज़ हमारे गाँव में नहीं है। इतना ऊँचा होकर ये करता क्या है?" "पता नहीं। अगले साल बाढ़ आएगी तो हम इस पर चढ़ जाएँगे।" इफ्फत बोली। "बड़े लोग तो तैर कर निकल जाएँगे। और गाय-भैंस, बकरियाँ? वो इस टॉवर पर चढ़ नहीं पाएँगे।" "तो फिर ये टॉवर किस काम का?" राशिद बोला। "राशिद ये बड़े लोग बुद्धू क्यों होते हैं?" इफ्फत बोली। "बुद्धू होना कोई बुरी बात नहीं है। हाँ, पर बड़े लोग सबका ख्याल रखकर कोई चीज़ नहीं बना पाते।" राशिद ने मोबाइल टॉवर को देखते हुए कहा।" प्लूटो
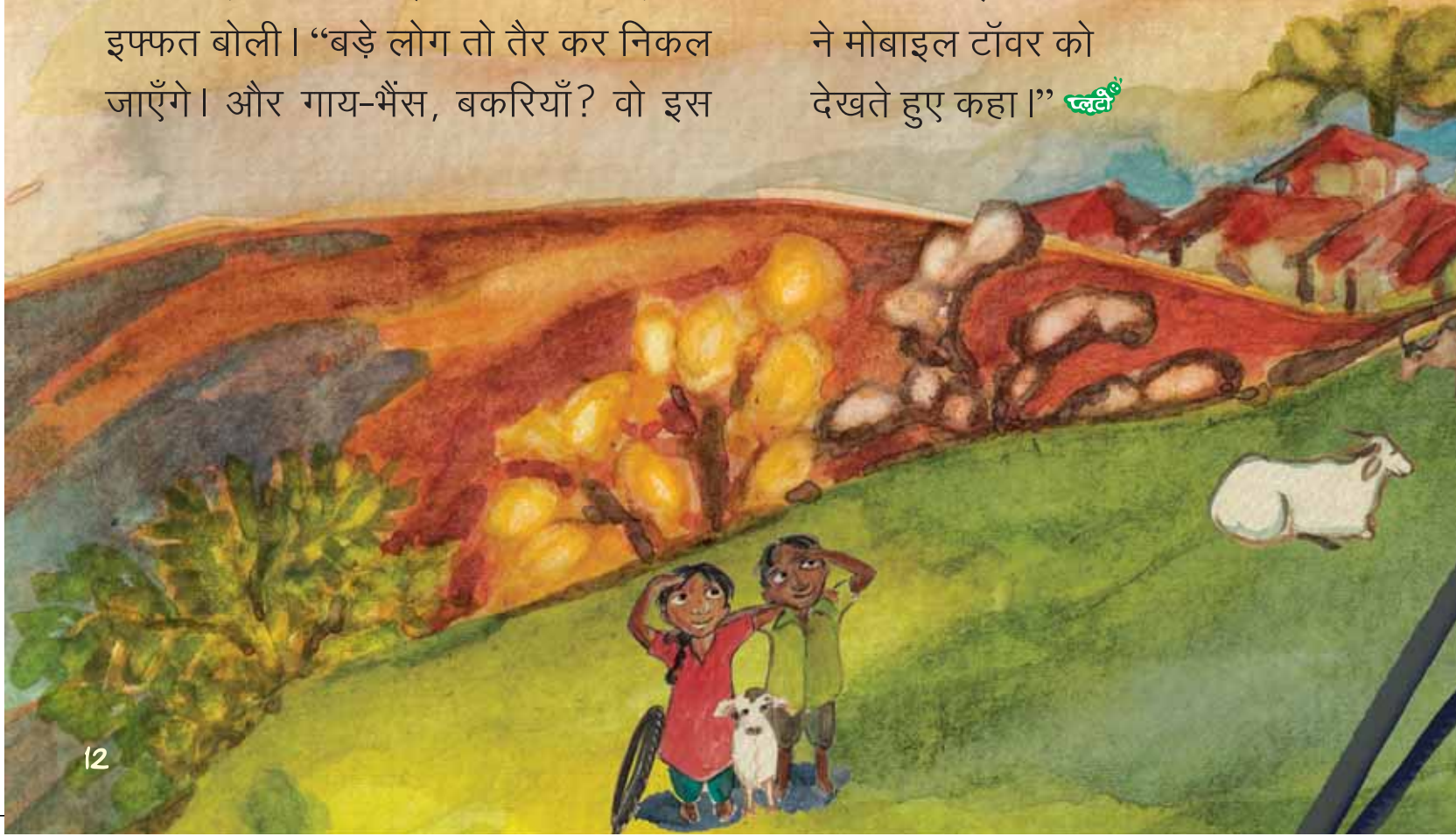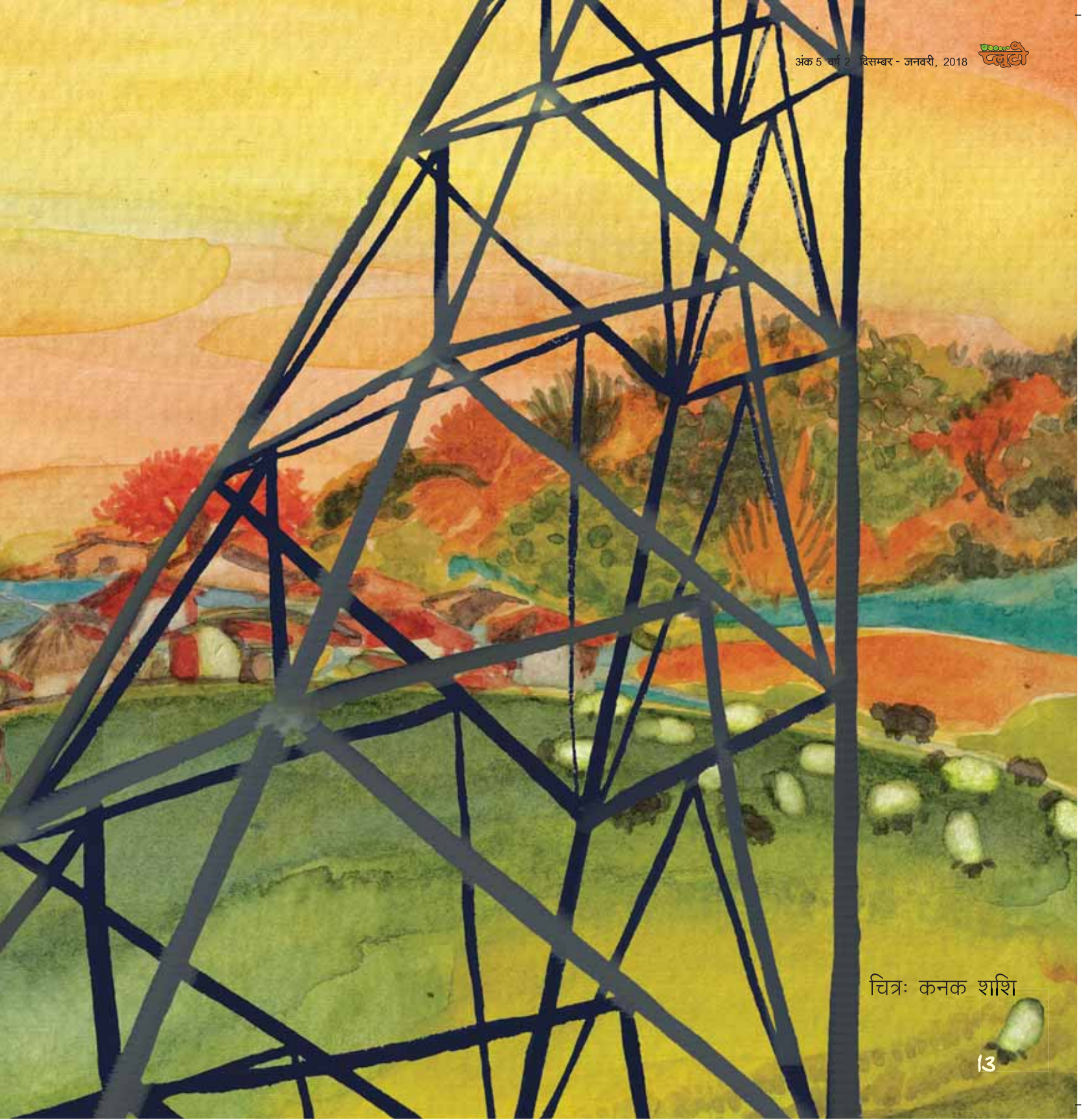
चित्रः कनक शशि
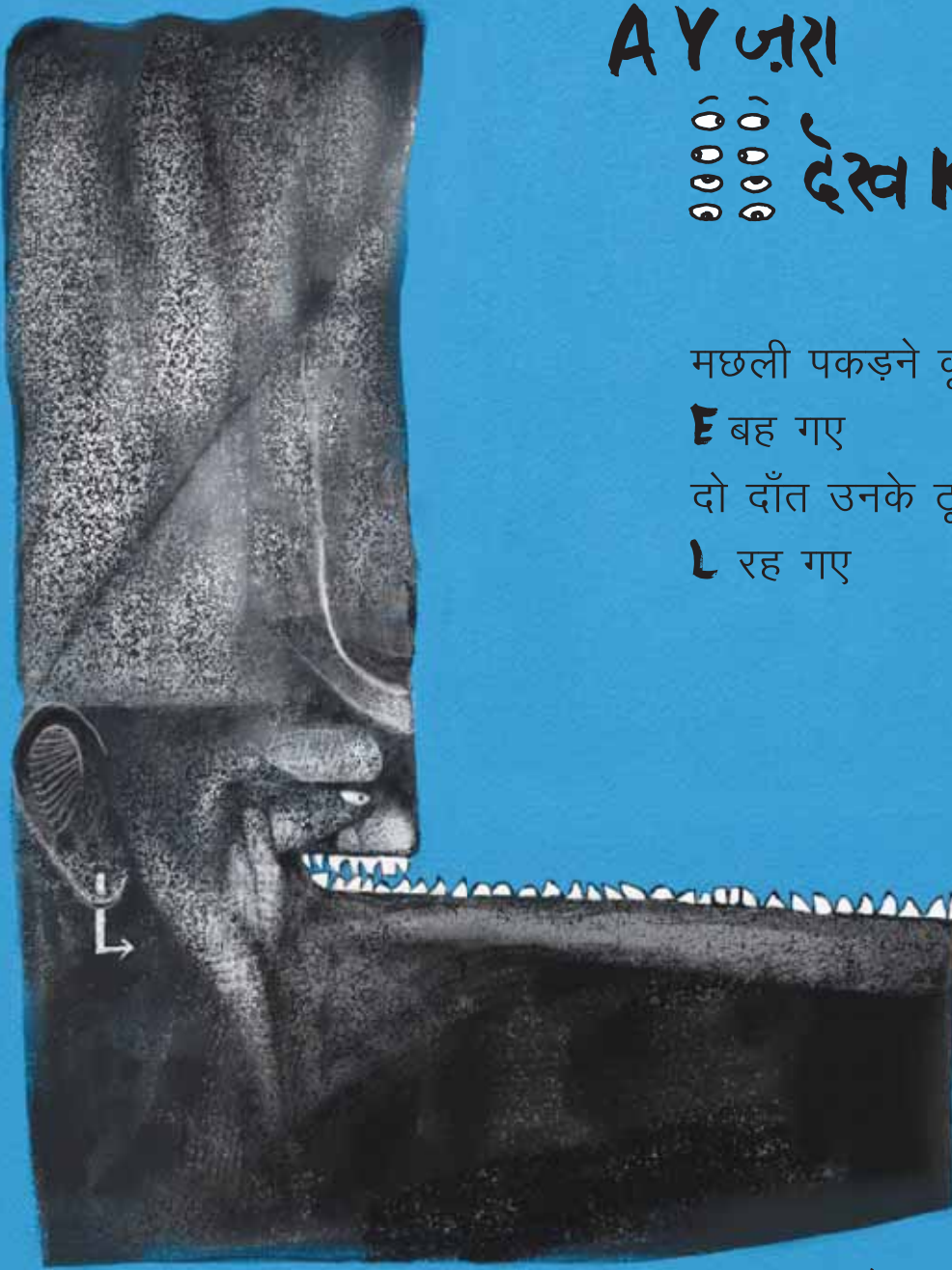
A Y ज़रा देख K चलो

मछली पकड़ने कूदे तो
E बह गए
दो दाँत उनके टूटे तो
L रह गए

चित्रः चन्द्रमोहन कुलकर्णी

तुम N का चेहरा बनाना चाहोगे?
जो बनाओ उसे हमें ईमेल या डाक से भेज दो।

कोची का घर
कोची की नाव
कोची की मछली

स्मित कबीर
सात वर्ष, मुम्बई

मेरे गाँव का नाम निक्कुम है। अभी सर्दियाँ हैं। धान कट रही है। कुछ धान खलिहान में आ चुकी है। उसे बैल पैरों से रौंद रहे हैं। इससे दाने बालों से अलग हो जाएँगे। गाँव में बहुत सारी चीज़ें हो रही हैं। चित्र में क्या-क्या बताऊँ? तुम हमारे गाँव ही आ जाओ न! हम नए आए चावलों की खीर पकाएँगे।
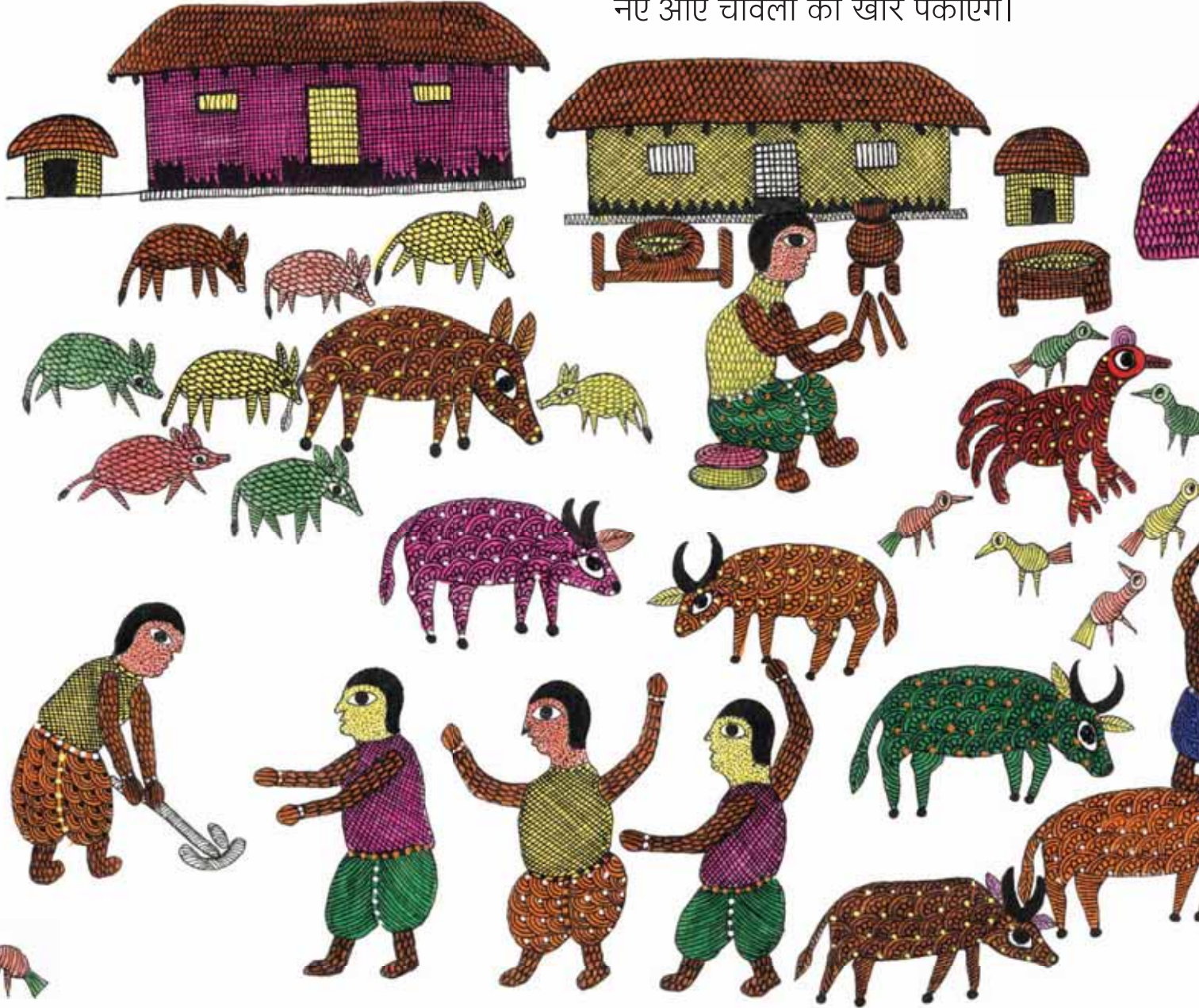
सर्दियाँ

चित्र और कथा - राधेश्याम खैरवार
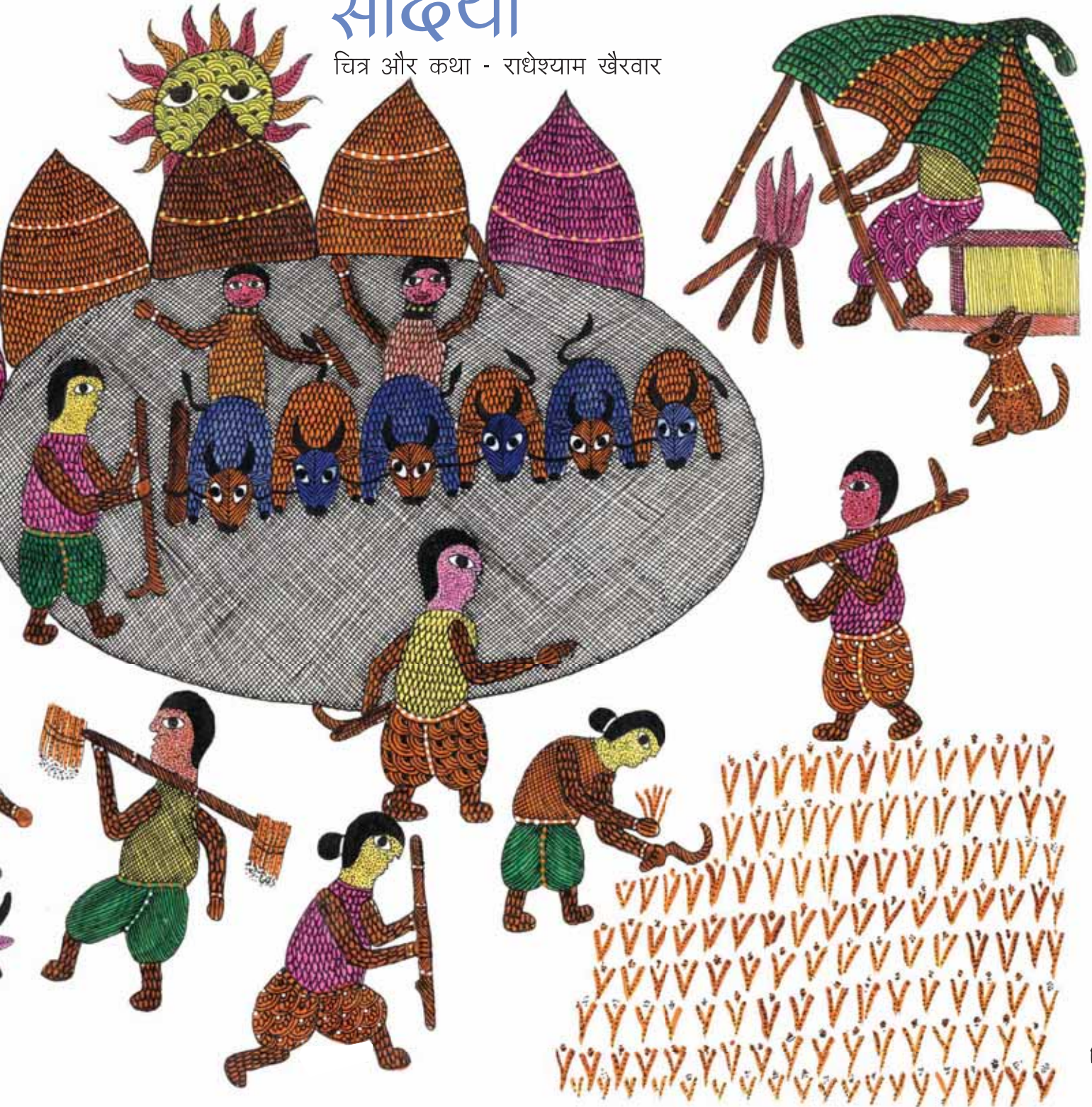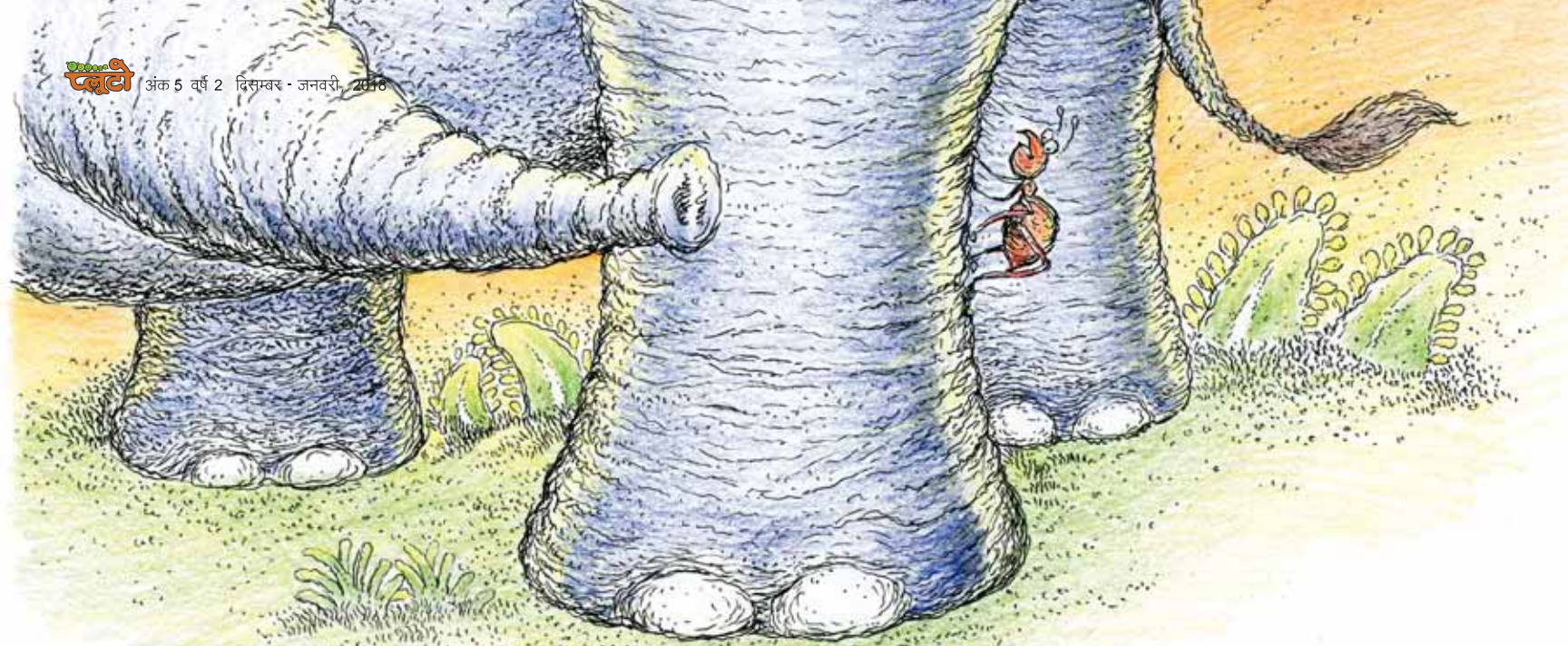
उड़ गया हाथी

श्याम सुशील

चींटी के आगे
हाथी खड़ा था
हाथी के पाँव पे
चींटा चढ़ा था

चींटी ने डाँटा-
नीचे आ जा!
चींटा बोला-
बाय-बाय टाटा!

चित्रः पार्थो सेनगुप्ता

चींटी को आया
ज़ोर का गुस्सा
घूर के उसने
चींटे को देखा

और पलटकर
मारी जो लात
उड़ गया हाथी
चींटे के साथ!

मैंने एक कविता लिखी...

माधुरी पुरन्दरे

मैंने एक कविता लिखी। कविता में सूरज बादलों के पीछे से झाँक रहा था। हवा धीमे-धीमे बह रही थी। चिड़ियाँ गाने गा रही थीं। फूल खिले थे। और उन पर तितलियाँ चक्कर काट रही थीं।

अचानक एक मक्खी उस कागज़ पर बैठ गई। कविता की हवा मक्खी से लिपट गई। मक्खी के पंख काँपने लगे। उसे ज़ोर-से छींक आ गई। इतनी ज़ोर-से कि कागज़ पर लिखे शब्द चौंक गए और इधर-उधर उड़ गए।

उस दिन से मैं कविता को कागज़ पर नहीं लिखता। उसे अपने मन में ही रखता हूँ।

चित्र: अमृता
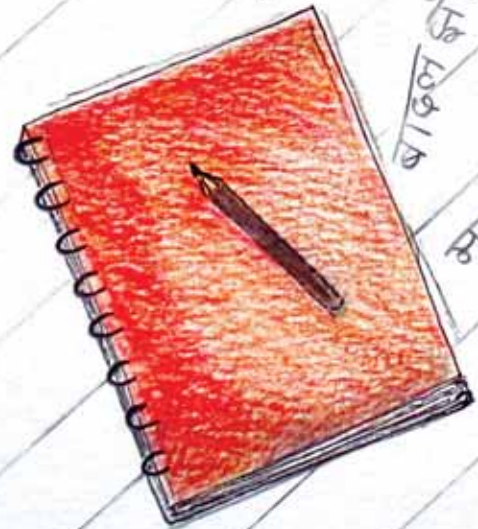
चक्कर कविता गई
सूरज
बादल
कविता
अचानक
बैठी
उधर
इधर

एक चिट्ठी
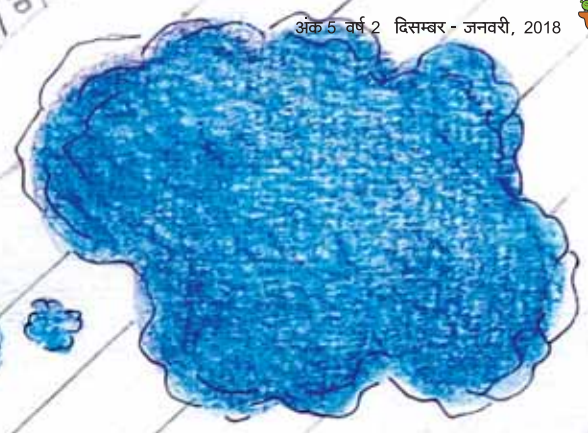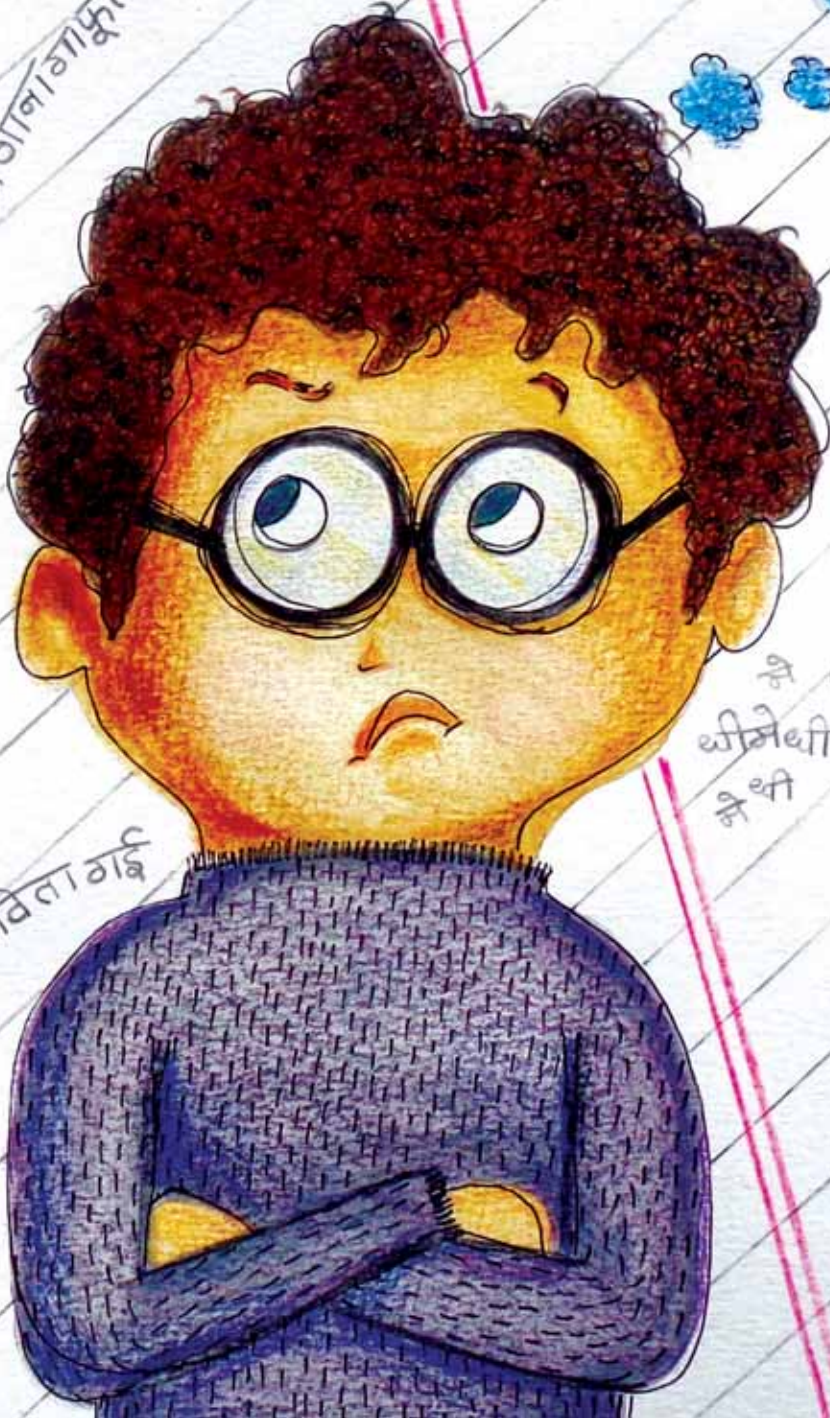
प्रिय सेंटा,

क्या तुम सिर्फ बच्चों को गिफ्ट देते हो? क्या तुम हमारी कॉलोनी के चौकीदार को एक स्वेटर दे सकते हो? स्वेटर थोड़ी छोटी लाना। क्योंकि वह बहुत ही दुबला है। क्या मेरे लिए तुम गिफ्ट खरीद चुके हो? अगर नहीं खरीदा हो तो मुझे इस बार दो बड़े मोजे चाहिए। मैंने नानी के मोजे काटकर एक पपी की स्वेटर बना दी है। खरीदने से पहले पपी की स्वेटर देख लेना। मैंने उसे अपने पुराने बस्ते में छिपा रखा है। बस्ते की ज़िप बहुत आवाज़ करती है ज़रा धीमे से खोलना। वरना अम्मी जाग जाएँगी। मैंने दो बातें कही हैं। दोनों याद रखना।

...

तुम्हारी दोस्त

हाँ, चौक में हमारी गली में
एक और इफ्फत रहती है।
तुम कन्फ्यूज़ तो नहीं होगे न?
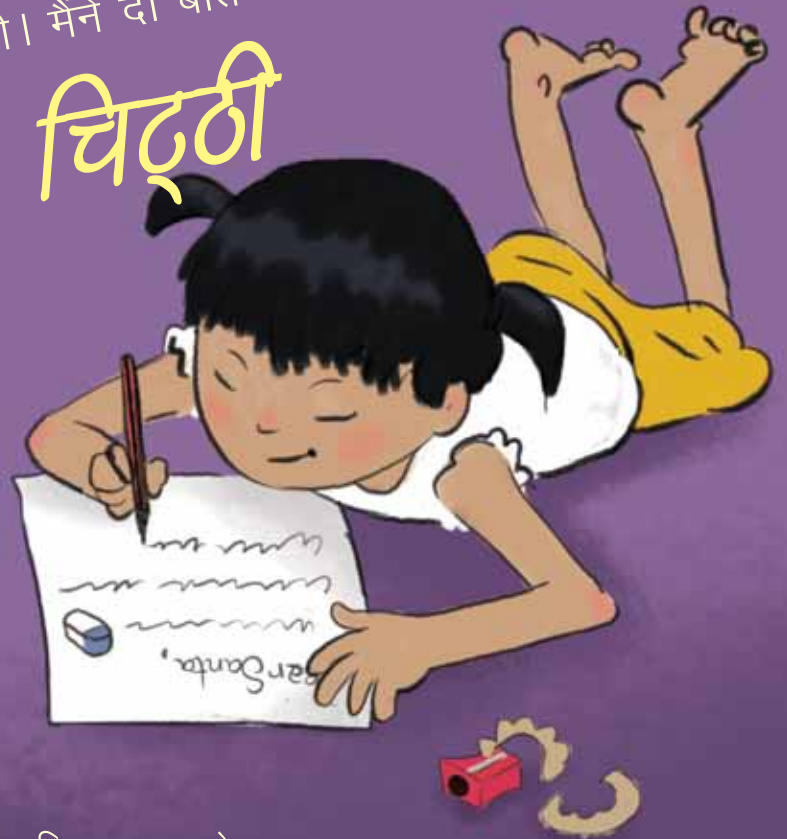
चित्रः मयूख घोष

कोई है!

गणेशराम

मुझे पेड़ बहुत पसन्द हैं। उनकी पत्तियाँ भी। हाथी पत्तियाँ खाता है तो दिखता है। पर कोई बहुत छोटा कीड़ा उन्हें खा रहा हो तो?

उसके खा चुकने के बाद हमें पता चलता है। खाने के निशान देखकर। जैसे, इस पत्ती का हरा हिस्सा कोई खा गया है। असली पत्ती गायब। बस जाली रह गई है।

पत्तियों पर ये चित्र कौन बना रहा है? चित्रकार तरह-तरह की इल्लियाँ हैं।

डिज़ाइन कितनी सुन्दर है न! इल्लियों ने पत्ती के अन्दर घुसकर उसका हरावाला हिस्सा खाया है। जहाँ-जहाँ हरा हिस्सा गायब होता जाता है वहाँ-वहाँ सुरंग-सी बनती जाती है।

यह करंज नाम के पेड़ की पत्ती है। पत्तियों पर निशान दिख रहे हैं? ये असल में कीड़ों के घर हैं। कीड़े पतली-सी चादर ओढ़े रहते हैं। जिस चादर पर छेद दिख रहे हैं वह घर खाली हो गया है। घर का दरवाज़ा खुला पड़ा है।

एक बार मैं अर्जुन के पेड़ के नीचे खड़ा था। कई कीड़े उसकी पत्ती के नीचे आ-जा रहे थे। मैंने उस पेड़ की एक पत्ती तोड़ ली। उसे पलट कर देखा। पत्ती के बीच की मोटी लकीर के नीचे ध्यान से देखा। वहाँ दो उभरे दाने दिखे। ये छेद असल में कीड़ों के रस पीने की जगह थी। यह दूसरी पत्तियों पर भी होता है।

तुम्हारे इलाके की पत्तियों पर क्या चल रहा है? ध्यान से देखना। किसी बड़े की मदद से फोटो भी खींचना। हमें भिजवाना। हम कुछ मज़ेदार पत्तियों को छापेंगे।

फोटो - टी पी विश्वनाथन, गणेशराम

नदी माँ

अशोक भौमिक

नदी को देखना कितना अच्छा लगता है न! बारिश में नदी का पानी लोगों के घर भी डुबो देता है। जिनके घर डूब जाते हैं वे भी नदी को प्रेम करते हैं। और नदी के साथ ही रहना चाहते हैं। इन दो मूर्तियों को जिसने बनाया होगा वो भी नदी से बहुत प्रेम करता होगा।

यमुना कछुए पर सवार है। गंगा मगरमच्छ पर। मूर्तिकार को नदी की याद आती होगी। और वह झट-से नदी की तरफ चल पड़ता होगा। नदी भी तो उसे याद करती होगी? मछली पर सवार होकर नदी मूर्तिकार के घर कैसे पहुँचती? तो उसने नदियों के वाहन चुने – मगरमच्छ और कछुआ। ये दोनों ज़मीन और पानी दोनों पर चल सकते हैं।

नदी की ये मूर्तियाँ मिट्टी से बनाई गई हैं। और फिर इन्हें आग में पकाया गया है। नदी की कौन-कौन सी चीज़ें तुम्हें इन मूर्तियों में दिखती हैं? क्या तुम नदी को चिट्ठी लिखना चाहोगे?

(1600 साल पुरानी ये दोनों मूर्तियाँ दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय में देख सकते हैं।)

बातें

शशि सबलोक

पापा रोज़ सुबह चुपचाप मेरे पास आते हैं। और धीरे-से मेरे कान में बोलते हैं - उठ जाओ...छह बज गए हैं। और फिर मुझे चादर अच्छे से ओढ़ा कर चुपचाप चले जाते हैं। पापा को नहीं पता कि मैं रोज़ उनकी बात सुन लेती हूँ। मम्मी-पापा तो यही समझते हैं कि

सात बजे जब मम्मी ज़ोर-ज़ोर से बोलती हैं

उठो उठो भाई उठो देर हो गई...

तभी मैं उठती हूँ।

रोज़ रात को मम्मी मुझे कहानी सुनाती हैं। कहानी सुनाते सुनाते जब थोड़ी देर हो जाती हैं वो चुपके से उठ कर चली जाती हैं। मम्मी को लगता है मैं सो गई हूँ। पर मैं देर तक बरतन धुलने की आवाज़ सुनती रहती हूँ। फिर मम्मी चुपके-से आकर मेरे पास लेट जाती हैं। और धीरे से बोलती हैं-शुक्र है रात बनी-फिर हम दोनों सो जाते हैं। प्लूटो

चित्रः तापोशी घोषाल

दावत

नेहा सिंह

आरज़ू को चॉक खाना पसन्द है।
मुझे गीली मिट्टी।
ध्रुव को सीमेंट कुतरने में बड़ा मज़ा आता
है। और परम तो अपनी कॉपी के कई
पन्ने सफाचट कर चुका है।
हमने कल मेरे घर दावत रखी है।
चॉक की सब्ज़ी होगी।
कागज़ की बिरयानी।
सीमेंट की दाल होगी।
मिट्टी की खीर।
बड़ा मज़ा आएगा ऐसी अनोखी दावत में।

चित्रः सोनाली बिस्वास

इक कीड़े की आस में
कौन छिपा है घास में

कार्तिक शर्मा

चित्र - मिष्टुनी चौधुरी

प्लूटो इकतारा द्वारा विकसित

सम्पादनः सुशील शुक्ल
शशि सबलोक

डिज़ाइनः तापोशी घोषाल

आवरण चित्रः तापोशी घोषाल

मुद्रक तथा प्रकाशक संजीव कुमार द्वारा
तक्षशिला पब्लिकेशन-तक्षशिला एजुकेशनल सोसाइटी
की इकाई के लिए
मल्टी कलर प्रेस, शेड नं. 92 डी.एस.आई.डी.सी.,
ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज़ 1, नई दिल्ली 110020
से मुद्रित एवं सी-404, बेसमेंट, डिफेंस कॉलोनी,
नई दिल्ली 110024 से प्रकाशित, **सम्पादकः सुशील शुक्ल**

सम्पादकीय पताः
ई-7/413 एच आई जी, प्रथम तल
अरेरा कॉलोनी
भोपाल - 462016
फोन - 0755 2446002, 8989544927
ई मेलः pluto@takshila.net

(इस अंक की ज़्यादातर रचनाएँ मानव संग्रहालय, भोपाल के सहयोग से आयोजित कार्यशाला में लिखी गई हैं।)

चाँद की रोटी

मोहम्मद साजिद खान

चाँद की रोटी
पानी में आई
मछली फिर भी
खा न पाई

चित्रः चन्द्रमोहन कुलकर्णी

आर एन आई नं. DELHIN/2016/68357 दुमाही बाल पत्रिका

साँपों की अम्मा

अरशद खान

कोई मचल रहा है,
कोई फिसल रहा है,
कोई है बेकरार,
साँपों की अम्मा के
दुखड़े हज़ार

आती किसी को
छींकें,
जकड़े हैं कुछ के
सीने,
कुछ को हुआ बुखार
साँपों की अम्मा के
दुखड़े हज़ार

चित्रः तापोशी घोषाल